

वे तो सर्वव्यापी हैं, अणु-अणु में बसे हुए निर्गुण, निराकार परब्रह्म है, जिन्हें कबीर राम कहकर पुकारते हैं, जब कि तुलसीदास के राम सगुण ईश्वर हैं; साकार भगवान हैं, जिन्होंने राजा दशरथ के घर अवतार धारण किया है। तुलसी के राम राजा के पुत्र हैं, जो श्रेष्ठ मानव हैं। शील, सौंदर्य और शक्ति से सम्पन्न राम तुलसी के आराध्य हैं जो मर्यादा पुरुषोत्तम राम हैं। तुलसी ने अपने महाकाव्य में राम के विभिन्न रूप जैसे कि आदर्श मानव, आदर्श राजा, आदर्श पति, आदर्श पुत्र, आदर्श भाई, आदर्श वीर, आदर्श पिता को चित्रित किया है। तुलसी के “रामचरितमानस” और राम का प्रभाव मैथिलीशरण गुप्त के “साकेत” और राम पर पड़ा है। तुलसी के राम परब्रह्म, विष्णु के अवतार और मर्यादा पुरुषोत्तम हैं। गुप्तजी ने कहा है कि “रामचरित मानस” के राम “साकेत” में नायकों के भी नायक और सबके शिक्षक अथवा शासक के रूप में प्रतिष्ठित हैं।

तुलसी के राम “हिन्दी साहित्य के इतिहास में मध्यकाल के भक्तिकाल की सगुण भक्ति काव्यधारा की रामभक्ति शाखा के सर्वश्रेष्ठ कवि गोस्वामी तुलसीदास हिन्दी की अद्वितीय कवि प्रतिभा हैं। इनका जन्म वि.सं. 1589 में उ.प्र. के बाँदा जिले के राजापुर गाँव में हुआ था। इनके पिता का नाम आत्माराम दूबे तथा माता का नाम हुलसी था। इनके बचपन का नाम “रामबोला” था। इनके गुरु का नाम नरहरिदास था। तुलसीदास का विवाह दीनबन्धु पाठक की पुत्री रत्नावली से हुआ। रत्नावली की मधुर भर्त्सना से वे रामभक्ति की ओर मुड़े।

संदर्भ:-

1. नेमिचंद्र जैन (सं.), मुक्तिबोध रचनावली, भाग - 5, पृ. 290
2. डॉ. धर्मवीर, कबीर के आलोचक, पृ. 31
3. आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी, हिन्दी साहित्य की भूमिका, पृ. 92
4. डॉ. विश्वनाथ त्रिपाठी, लोकवादी तुलसीदास, पृ. 11
5. प्रो. मैनेजर पांडेय, भक्ति आंदोलन और सूरदास का काव्य, पृ. 35
6. नेमिचंद्र जैन (सं.), मुक्तिबोध रचनावली, भाग - 5, पृ. 292
7. आचार्य रामचंद्र शुक्ल, गोस्वामी तुलसीदास, पृ. 24
8. प्रो. नामवर सिंह, दूसरी परम्परा की खोज, पृ. 57
9. आचार्य रामचंद्र शुक्ल (सं.), जायसी ग्रंथवली, पृ. 122
10. नेमिचंद्र जैन (सं.), मुक्तिबोध रचनावली, भाग - 5, पृ. 292
11. आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी, कबीर, पृ. 220
12. डॉ. वीर भारत तलवार, पल प्रतिपल (पत्रिका, अंक-42, लेख-कबीर पर कब्जे की लड़ाई), पृ. 56
13. डॉ. धर्मवीर, हंस (पत्रिका, अंक मार्च 1998, लेख-अभिशाप्त चिंतन से इतिहास चिंतन की ओर), पृ. 53
14. प्रो. मैनेजर पांडेय, भक्ति आंदोलन और सूरदास का काव्य, पृ. 26
15. मध्यकालीन हिन्दी कविता, सं. रोहित उपाध्याय और डॉ. हसमुख बारोट, पृ. 69

माड़ा की गुफाओं का अध्ययन

डॉ. गोविन्द बाथम

सहायक प्राध्यापक -इतिहास,
शासकीय महाविद्यालय माड़ा, जिला-सिंगरौली (म.प्र.)

मध्य प्रदेश के सिंगरौली जिले में स्थित माला तहसील के पास यह पुरातात्विक गुफाएं स्थित हैं यहां पर ठोस चट्टानों को काटकर इन गुफाओं का निर्माण किया गया है यह गुफाएं का निर्माण कार्य शुंग काल में किया गया और परवर्ती गुप्त और कल्चर कल में इन गुफाओं का उपयोग सब और वैष्णव संप्रदाय द्वारा किया गया प्रस्तुत शोध पत्र में पुरातात्विक सर्वेक्षण के आधार पर इन गुफाओं का अध्ययन किया गया है:-

गणेश माड़ा गुफा समूह माड़ा तहसील में शासकीय महाविद्यालय माड़ा के पास स्थित है। इस समूह में एक पहाड़ी की पश्चिमी ओर ठोस पहाड़ी को काटकर गुफाओं का निर्माण किया गया है। गणेश गुफा में प्रवेश द्वार चार स्तंभों पर आधारित है, जो की सादा है, जिसके अंदर आयताकार कक्ष है जिसमें एक ओर 16 भुजी नटराज प्रतिमा का अंकन किया गया है। अंदर चार स्तंभों पर आधारित प्रदक्षिणा पथ है व मध्य में एक कक्ष बना हुआ है जो कि खाली है, गुफा की बनावट को देखते हुए ऐसा प्रतीत होता है कि उक्त गुफा का निर्माण शुंग काल में हुआ होगा एवं ऐसा प्रतीत होता है कि मौर्य अंतर काल के बाद बौद्ध भिक्षुओं के दल धर्म प्रचार के लिए भिन्न-भिन्न रास्तों से दक्षिण की ओर गए होंगे उनही बौद्ध भिक्षुओं के दलों को स्थानीय शासको द्वारा ठोस चट्टानों को काटकर इन गुफाओं का निर्माण कराया गया है जो परवर्ती काल में बौद्ध धर्म का पतन होने पर अन्य संप्रदायों द्वारा उपयोग में लाई गई होगी। पहाड़ी के मध्य भाग में भी कई गुफाएं निर्मित की गई हैं जो समकालीन हैं। व शीर्ष पर मंदिरों एवं शिवलिंगों के अवशेष प्राप्त होते हैं जो की गुप्तोत्तरकालीन छठवीं-सातवीं शताब्दी के प्रतीत होते हैं।

हनुमान माड़ा गुफा समूह:- यह गुफा समूह गणेश माड़ा के विपरीत दिशा में पूर्व की ओर पहाड़ी की तलहटी में स्थित है, मुख्य गुफा एकात्मक है और अंडाकार है जिसमें प्रवेश करने के लिए एक ही प्रवेश द्वार है जो की काफी छोटा और सकरा है, जिसमें लगभग अन्दर की ओर 5*10 फिट का आयताकार कक्ष है, तथा इसके पीछे पृष्ठ भाग में 6*6 फिट का कक्ष बना हुआ है जिसके मध्य में एक शिवलिंग स्थापित कर दिया गया है। आयताकार कक्ष के उत्तरी भित्ति पर लगभग 5 फिट ऊंची व 16 भुजी नटराज प्रतिमा का अंकन किया गया है, जो कि सिंदर से लोपित है और वर्तमान में जन सामान्य द्वारा उसकी पूजा देवी के रूप में की जा रही है। इस गुफा का निर्माण काल सुंगैकालीन प्रतीत होता है तो प्रवर्ती काल में अन्य सम्प्रदाय द्वारा पूजा के उपयोग में लाए गए।

सदा शिव गुफा:- यह गुफा हनुमान माड़ा के पास ही स्थित है और प्राकृतिक रूप से निर्मित है, जिसे वर्तमान में श्रद्धालु ब्रह्म

गुफा कहते हैं, इस शैलकृत गुफा में सदा शिव प्रतिमा के शीर्ष भाग का ही अंकन किया गया है, जो कि लगभग 6 फीट ऊंचा है। प्रतिमा में सदा शिव त्रिमुखी है, जिसमें सम्मुख मुख सौम्य, दाएं मुख विकराल व बांये सामान्य है। उक्त प्रतिमा जलवायु व अन्य कारणों से क्षरित हो रही है, जन सामान्य द्वारा इस प्रतिमा को भी सिंदर से लेपित कर दिया गया है व पूजा अर्चना की जाती है। इसके अतिरिक्त इन गुफाओं के पास ही गौरी गणेश, कार्तिकेय की प्रतिमाओं का अंकन चट्टानों में किया गया है। सदा शिव प्रतिमा का काल 6वी. सदी ईस्वी का प्रतीत होता है व अन्य प्रतिमाओं का काल 8वी.- 9वी. सदी ई0 का प्रतीत होता है। पहाड़ी में इस दिशा में चट्टानों के मध्य कई गुफाओं का निर्माण किया गया है।

जल जलिया गुफा मंदिर:-

यह गुफा मंदिर माड़ा तहसील से 500 मीटर की दूरी पर घने वन में स्थित है यहां पर प्राकृतिक रूप से निर्मित गुफा के ललाट बिम्ब पर लक्ष्मी नारायण प्रतिमा का अंकन किया गया है, जो सर्पफणयुक्त है, गुफा की दाएं ओर की भित्ति पर शृंगकालीन ब्राह्मी लिपि में एक लाइन का संक्षिप्त लेख उत्कीर्ण था जो पुजारी द्वारा चुने के रंग से लगातार पुताई करने से क्षरित हो गया है। संजय गांधी महाविद्यालय सीधी के इतिहास के प्रोफेसर सन्तोष सिंह ने और जीवाजी विश्वविद्यालय ग्वालियर के रिटायर्ड प्रोफेसर शिवकान्त द्विवेदी ने 90वें के दशक में इस क्षेत्र के सर्वेक्षण के दौरान यह अभिलेख देखा था। जिससे यह स्पष्ट होता है इन गुफाओं का निर्माण शृंगकाल में हुआ होगा। यहां पर कई प्रतिमा खंड रखे हुए हैं जिसे जन सामान्य जलजलिया माई के रूप में पूजते हैं। जलजलिया गुफा के बाईं ओर एक प्राचीन बावड़ी बनी हुई है जो वर्तमान में भंग अवस्था में है और कलचुरी कालीन प्रतीत होती है। गुफा के पास ही सघन वन में जाने पर पर भूताली कुंड है, जिसके मार्ग में कई एकात्मक प्रस्तर के भाग, मंदिर व प्रतिमाएं हैं जो शिव परिवार से संबंधित है जो कलचुरी कालीन आठवीं-नौवीं सदी की प्रतीत होती है।

रावण माड़ा:-

यह गुफा माड़ा तहसील से बिंदल मार्ग पर 1 किलोमीटर की दूरी पर मुख्य मार्ग के सामने स्थित है और पूर्व मुखी है गुफा के प्रवेश द्वार चार स्तंभों पर आधारित है और बनावट में सादे हैं। गुफा में एक आयताकार कक्ष और एक कक्ष मध्य में बना हुआ है। आयताकार कक्ष की दाईं भित्ति पर सिर पर कैलाश पर्वत को धारण किए हुए रावण की प्रतिमा का अंकन है। पर्वत पर शिव पार्वती विराजमान है इस प्रतिमा को रावणनुग्रह प्रतिमा कहा जाता है। इसी से इसका नाम रावण माड़ा पड़ा होगा। गुफा मुख्य कक्ष के दाएं-बाएं तीनों ओर प्रदक्षिणापथ बना हुआ है जिसके दाएं-बाएं दो-दो छोटी कोठारियों का निर्माण किया गया है। ऐसा प्रतीत होता है कि उक्त गुफा का निर्माण शृंग काल में बौद्ध भिक्षुओं के निवास स्थान बिहार के रूप में हुआ होगा जो

कालांतर में परिवर्तित होकर शासकों द्वारा अपने पूजा स्थल के रूप में उपयोग में लाई गई। इस गुफा के पास ऊपर की ओर अन्य गुफाओं का भी निर्माण किया गया जो समकालीन है।

धोला गिरी शैलकृत गुफा समूह:-

यह शैलकृत गुफा समूह सिंगरौली जिले की चितरंगी तहसील में सुंदर क्षेत्र में स्थित है इसकी जिला मुख्यालय से दूरी लगभग 135 किलोमीटर है यहां पर कैमर पठार के शीर्ष पर चार गुफाओं का समूह है, जो प्राकृतिक रूप से निर्मित है। जिसमें से एक गुफा में मध्य पाषाण काल से लेकर ऐतिहासिक काल तक के चित्रों का अंकन लाल व रेडूआ रंग से किया गया है। इन चित्रों में जानवरों शिकार करते हुए मानव का अंकन किया गया है। यह चित्र लगभग 10000 वर्ष से लेकर ऐतिहासिक काल के है। इस गुफा को हम गुफा क्रमांक 3 कह सकते हैं। गुफा क्रमांक 1 व 2 में कोई चित्र नहीं है। इन्हीं गुफाओं में से गुफा क्रमांक 4 में लगभग 1 मी मोटा लूज ग्रेवल जमाव प्राप्त हुआ है, जिसका उत्खनन किया जाए तो पुरोपाषाण काल के उपकरण व अन्य जानकारियां प्रकाश में आ सकती हैं।
